

43. 1; KośaKaTā. 2. 2525] 1 butter or oil used as an ointment 2 A act of applying (ointment or some other substance to the eyes) B act of anointing, smearing (with butter, ghee, oil or some other substance) C act of instigation, stimulation 3 A collyrium, kohl, eye-salve (prepared from mineral, herb or lamp-black) B paste 4 a kind of mineral, antimony, vitriol of copper 5 bending (?) (thrusting *nt.*) 6 A manifestation B suggestion (poetics) 7 name of a Sāman 8 pimple on the eye 9 covering of the soul 10 A (fig.) ignorance B darkness C impurity D stain, blemish E fault 11 ink 12 name of a heavenly missile 13 form, shape 14 leading to fruition, realisation 15 kind of dye 16 kind of corn 17 kind of gem, jet 18 flower of Añjana tree 19 epithet of Siva 1 butter or oil used as an ointment अय् यत्पदेशिन्यामिदायाः पूर्वमञ्जनमवौष्टे निलिम्पति KausīBr. 3. 7 (12. 15); SāṅkhāSS. i. 10. 2; अपर आह । यत्तदञ्जनोपञ्जनमिति MahāBh. ii. 338. 6 (*on v. 1. 2*) (Pradi. तैलाभ्यङ्गः); मध्ये यूपं समारोय ... मवुलाजाक्षजं दचादञ्जनं मात्यमेव च BhaviP. 396B. 27 (ii(3). 2. 73); तदेतद्रजः संगृह्य इविधीनयोः शक्तयोरक्षे तेन रजसा संयुक्तमञ्जनं प्रश्निपैत् NyāyMāVi. 225. 25 (*on iv. 1. 10*); KandaCū. vii. 1. 40; नभः अक्षः । नभ्यम् अञ्जनम् SiddhāKau. 277B. 9; 2 A act of applying (ointment or some other substance to the eyes) अनिष्टीञ्जनं सदा चाञ्जनं सत्यवचनं सुमनसां धारणम् SāmaViBr. iii. 1. 2 (*comm. अक्षणोः अञ्जनम्*); प्रसाधनं च केशानामञ्जनं दन्तधावनम् । पूर्वाङ् एव कुर्वति MahāBhā. xiii. 107. 21; मुष्टिकपालावदानाज्ञनाभ्यञ्जनवपनपावनेषु चैकेन MimaSū. v. 2. 4; पीडनावेष्टनाज्ञनप्रकरणाध्यासनेषु पूर्वः साहसदण्डः ArthSā. ii. 106. 8 (3. 19) (*comm. कज्जलादिलेपने*); एवं नेत्रेषु मर्त्यानामञ्जनाश्रयोत्तनादिभिः दृष्टिराकुला भाति CaraS. i. 5. 16 (1922 Ed.); i. 5. 36 (1922 Ed.); vi. 9. 64 (1941 Ed.); अञ्जनादन्धः ... गर्भो भवतीत्येवमेतान् परिहरेत् SuśruS. iii. 2. 25; SuśruS. iii. 2. 25; HārīS. i. 2. 14; VaikhāD8. i. 2. 6; वजेयेत् ... अञ्जनं चाक्षणोः ManuSm. 2. 178; YājñaSm. 1. 33; अञ्जनाभ्यञ्जने चैव पिण्डसंवपनं तथा VāyūP. ii. 13. 58; BrahmāndP. ii. 11. 88; नावनाज्ञनपावनेषु योजयेदिष्वशान्तये AstāHr. i. 7. 26; अञ्जनं पक्षदोषस्य (कर्तव्यम्) AstāSam. i. 43. 15 (1. 7); i. 158. 24 (1. 30); सा मर्ही...अक्षिपाकमञ्जनादपहरति AstāSam. ii. 251. 18 (6. 20); ii. 211. 8 (6. 8); KalyāKā. 9. 69; मरिचं ... सर्पदृष्टानां पाने नस्याज्ञने हितम् SiddhYo. 68. 10; 68. 11; 68. 14; मधुमांसं प्राणिहिसां भास्करालोकनाज्ञने ... विवर्जयेत् SkandP. iv. 36. 21; vii(1). 166. 120; LaksmiT. 39. 22; अभ्यञ्जनाज्ञने पानं छत्रधारणमेव च ... विवर्जयेत् PadmP. i. 53. 17; v. 24. 195; BhaviP. 75B. 4 (i. 36. 28); सव्यस्य पूर्वमञ्जनं निर्दिष्टम् SāstrDi. 38. 2 (*on i. 3. 7*); तदेषु संपिषः पानं नावनाज्ञनतर्पणम् SārṅgaS. iii. 9. 7; iii. 13. 34; मूषकस्य क्षारकायस्य वा ... काकयोर्वा मेदसा वा नेत्रयोरञ्जनं धूपनं च कुर्यात् Hastyāyur. 64. 3 (1. 9); 65. 11 (1. 9); नस्याज्ञने तथा कृत्वा फणिनां गरलं हरेत् ĪśānSiPa. i. 40. 13; i. 44. 5; PañcaRā.(Nā.) iii. 14. 42; Mānaso. ii. 6. 652; गोदीहनेऽप्यञ्जने ... कपित्थः संप्रयुज्यते AbhinDa. 123; कान्तनागोऽयमुदकेनाज्ञनं नयनामृतम् RasRaSa. 28. 90; 12. 111; अञ्जनात् । वैरिदृग्घञ्जनम् NyāyMāVi. iv. 3. 1 (241. 21); xii. 4. 14 (702. 16); SārṅgaPa. 2986; एतस्यैव तरोः कुसुमेन ... यद्यञ्जनं क्रियते तदा नष्टचक्षुश्वभ्याम् भवति PuruṣPa. 68. 26; 69. 1; RaseCin. 9. 33; BhāvPra.(Bhā.) 3. 5; अञ्जनपदं च भेषजोत्सवादिनिमित्तकेतराज्ञनपरम् ViraMi.(Ānhika.) 33. 1; MayūMāli. 38. 16 (*on i. 3. 7*); अञ्जनं त्वस्त्रिसंस्करः Vaija. 171. 157; छी त्वनक्तिक्रियायाम् (रभसः) NānārthāSam. ii. 53. 72; अक्तौ (v. l. अङ्गौ) SabdaRaSaK. 190. 2; f. n. नपृष्ठियोस्त्वञ्जयत्यर्थं NānārthāSam. ii. 53. 73; 2 B act of anointing, smearing (with butter, ghee, oil or some other substance) अञ्जनादि पर्यंगि कृत्वोत्तरजन्यपुनरायनाय आśvaSS. I. vi. 14. 11; अत्र स्वरोरञ्जनमेके समामनन्ति ĀpaSS. vii. 27. 3; संमार्जनेनाज्ञनेन सेकेनोलेखनेन च । ... सुवः शुद्धिः VisṇuSm. 23. 56; गुरुपत्नीनां गात्रोत्सादनाज्ञनेनेशं वयनपादप्रशालनादीनि न कुर्यात् VisṇuSm. 32. 6; अञ्जनमपि ... चोदकप्राप्तं ... उग्राय स्यात् SābaBh. 1863. 9 (*on x. 2. 73*); TupT. 232. 12 (*on x. 1. 4*); लक्षणीकुर्यात्प्रयत्नेन लेपनैः लक्षणमञ्जनैः ... कुडं तत् VisṇuDhaP. ii. 40. 8; उलेखनेनाज्ञनेन ... शुद्धा सेचनेन धरा स्मृता LiṅgaP. i. 89. 66; TantrRa. 85. 16; 223. 4; SāstrDi. 423. 7 (*on v. 2. 4*); अञ्जनं तैलादिना गात्रस्य SmrtiCan. i. 122. 18; PadMañ. on KāsiVṛ. on P. v. 1. 2; अञ्जनस्य द्रव्यसामान्येन करणासंभवेन BhāṭṭiCan. 72. 22 (*on xv. 1. 10*); तैलादिनाऽङ्गिता अक्ता धृतेनेवाथ वाज्ञनम् NyāyMāVi. i. 4. 19 (59. 2); खुच्यमाधार्यं जुहा पशुमनक्ति इत्याधाराज्ञने लिङ्गान्तरे NyāyMāVi. 396. 25 (*on viii. 1. 5*); अञ्जनं धृतादिना गात्रस्य ViraMi. 94. 24 (*on 1. 33*); MimāKau. iii. 38. 8 (*on i. 2. 18*); यूपधर्मा अञ्जनोच्छ्रयणसम्मानपरिव्याणादयः BhāṭṭiDi. ii. 182. 10 (*on v. 2. 5*); एतचाज्ञनाधीमाज्यं लौकिकं ग्राह्यं न संस्कृतम् ViraMi.(Samaskāra.)

934. 16; 493. 24; ManaMe. 44. 1; 2 C act of instigation, stimulation यावच्चके नाज्ञनं बोधनाय व्युत्थानज्ञो हस्तिचारी मदस्य । ... रथूलास्तावत् प्रावहन् दानकुल्याः SiśuVa. 18. 26 (*comm. अञ्जनमुदीपनं कर्म*); संवादितां नयद्वर्गण-मञ्जनेन सेनामतङ्गजगणा मुमुक्षुर्भास्त्रम्: HarVi. 44. 12 (*but comm. भेदः*); 3 A collyrium, kohl, eye-salve (prepared from mineral, herb or lamp-black) वृत्रस्य कीनिकासीति त्रैकुदेनाज्ञनेनाङ्गे ĀpaSS. x. 7. 1 (*comm. त्रिकुदाद्यत्वे पर्वते भवं त्रैकुदम्*); ĀpaSS. x. 7. 2; MānSS. 59. 6; अञ्जनाभ्यञ्जनगन्ध-पुष्पधूपदीर्घांश्च दचात् KausīGS. iii. 4. 10; VaikhāGS. 2. 15 (33. 2); KausīSū. 35. 21; आहवेतु विशेषण ऋष्टनेत्रेविवाज्ञनम् MahāBhā. vii. 39*(1); न चन्दनं नाज्ञनपानभोजनम् । न किञ्चिदिच्छामि Rāmā. ii. 183*(20); चोररूपोऽयम्; अप्यथमक्षणोरञ्जनं हरेत् MahāBh. ii. 419. 5 (*on v. 3. 66*); अञ्जनाभ्यञ्जन-मेवास्या न प्रतिग्राह्यम् VasiSm. 5. 13; Saund. 8. 50; सौवीरमञ्जनं नित्यं हितमण्डोः प्रयोजयेत् CaraS. i. 5. 12 (1922 Ed.); i. 1. 69 (1922 Ed.); नदीजशिष्म्बी-त्रिकट्टन्यथाज्ञनम् ... प्रशस्यते वै दिवसेष्वपश्यताम् SuśruS. vi. 17. 27; iv. 19. 30; iv. 25. 33; BhelaS. i. 18 (30. 23) (? अञ्जनम्); तदञ्जनं पुष्पेणोदृत्य तस्यामञ्ज्यां निदध्यात् ArtbSā. iii. 230. 5 (14. 3); iii. 216. 5 (14. 1); योषितां नेत्रयोरञ्जनं ज्ञेयम् NātyaSā. 21. 28; धूमाज्ञनजृम्भणात् ... भवेदास्तम् NātyaSā. 7. 151; 8. 117; लिप्तीव तमोङ्गानि वर्षतीवाज्ञनं नभः Cāru. i. 19 = BālC. i. 15 = Mrēch. i. 34; Svatpna. 5. 10 = Kāvyādā. 2. 226 = Sarakāpīthā. 733. 7 = Kāvy Pra. 587. 1 = AlāṅkāSa. 58. 13 = SūktiRa. 191. 1 = Subhāsi. 890 = Kuval. 33; इदानीमसाकं पद्मतरविवेकाज्ञनजुपां समीभूता इष्टः SātTrayi. 6; 827; BhāvSā. 43; एतेन श्येनभासम्युरास्थिमयान्यञ्जनानि व्याख्यातानि KāmSū. 366. 24 (7. 1); एतैरेव सुपिष्टैर्वित्मालिप्याक्षतैलेन नरकपाले साधितमञ्जनं च KāmSū. 365. 6 (7. 1); विलोचनं दक्षिणमञ्जनेन संभाव्य ... यथौ शलाकामपरा वहन्ती KumāSam. 7. 59 = RaghuVa. 7. 8; उपवासे न दुष्यन्ति दन्तधावनमञ्जनम् VrSātāSm. 55; बिम्बं ... पूजयेत् ... वसनच्छत्रवस्त्रैस्तु दर्पणाज्ञनवाहनैः JayāS. 20. 255 (256); 23. 40 23. 77; 27. 72; MatsyaP. 59. 6; 193. 39; तदञ्जनं त्रैकुदं शैलं त्रिकुदं प्रति MatsyaP. 121. 15; अपसवं पितृभ्यश्च दचादञ्जनमुत्तमम् BrahmāndP. ii. 11. 55; ii. 11. 57; i. 18. 14; VisṇuP. iii. 11. 22; VākyāP. 1. 79; भृङ्गावलीष्वञ्जनमाय-ताक्ष्यः JānaHa. 3. 61; पिशाचवित्तिनायदानवाः पूज्याः । अभ्यञ्जनाज्ञनतालैः BrSaṁ. 48. 30; 48. 35; धूमेनाज्ञनभङ्गमेचकरुचा दिक्कचक्रवाले तते EI. xiv. 116. 9; Kirātā. 8. 38; सौवीरमञ्जनं नियं हितमण्डोस्तो भजेत् AstāHr. i. 2. 4; अञ्जनादेविव व्यक्तेः संस्कारो नेन्द्रियस्य च PramāVār. 1. 149: सुदृशां ... नवमञ्जनं नयनपङ्कजयोर्बिमेदे न शङ्कनिहितात्पयसः SiśuVa. 9. 46; DaśKuC. 32. 23; 105. 18; वध्याद् ब्रह्मस्य सिद्धाज्ञनविविरपः प्राक्तोऽधिःप्रचारः SūryS. 32; 73; Kāvyālañ. (Bhā.) 1. 55; AstāSam. i. 8. 11 (1. 3); i. 77. 8 (1. 12); ii. 10. 6 (4. 2); Rati-Raha. 14. 52; 15. 43; PāraS. 6. 351; TattvSaṁ. 1103; LaghvāśvaSm. 14. 4; अञ्जनोद्वैतनादर्शस्त्रिविलेपनयोषितः...ब्रह्मचारी विवर्जयेत् VedavyāSm. 1. 29; EI. vii. 104. 9; SāraTi. 10. 87; अञ्जनं तिलं गुरुप्तिं ... साधयेत् साधकः KulacūT. 6. 16; 16. 93; HarVi. 42. 36; 44. 12; Kapphiṇā. 7. 8; अतसीपुष्पसंकाशं यत्तावनेत्र-मण्डलम् । तत्रस्थमञ्जनं यत्तत तेजोऽवित्तिनिरोधकम् PrakaPañ. 56. 8; BālRā. 1. 42; अञ्जनं गुटिकां दिव्यां गृहीत्वा रक्षकाग्रतः BṛKathāK. 138. 15; प्रमदालोचनन्यस्त-मलीमसमिवाज्ञनम् Hitopa. 2. 144; ज्वलनञ्जनमाधत्ते प्रदीपो न रविः पुनः Yaśas-Cam. ii. 394. 1; i. 539. 2; ii. 289. 26; तैर्स्तैरञ्जनैः रक्षितेक्षणः क्षणदास्वपि समस्त-वस्तुजातं ... आवेदयति TilaMañ. 130. 11; 213. 9; अवलेहोऽज्ञनं चैव प्राक् प्रयोज्यं त्रिदोषजे SiddhYo. 1. 143; हेमन्ते ... मध्याहेऽज्ञनमिष्यते SiddhYo. 61. 9; 61. 135; AguiP. 58. 25; 70. 3; उमायाः पूजनं कार्यं ... कुञ्जमाज्ञनकङ्गतैः NilaP. 761; गुटिकासिद्धिमञ्जनम् । खङ्गं च पादुके चैव ... सर्वं तुष्टा प्रयच्छेत् SkandP. v(1). 18. 2; v(2). 11. 8; iii(2). 38. 34; VisṇuDhaP. i. 63. 16; ii. 52. 25; VarāP. 129. 60; 188. 67; यथा लोचनस्थमञ्जनमतिसामीप्याज्ञ दृश्यते Sāmkhya-TaKau. 213. 6 (*on 7*); नस्यं तस्य प्रयुञ्जीत पानमालेपनाज्ञनम् BhaviP. 73B. 14 (i. 35. 35); 295B. 23 (i. 202. 14); 401B. 24 (ii. 3. 10. 16); 672A. 25 (iv. 45. 3); विष्णुः ... सांनिष्टेऽपि स्थितो दूरे नेत्रयोरञ्जनं यथा PadmP. vi. 128. 24; YogVā. vi(1). 90. 27; कान्त्ताविलोचनन्यस्तं मलीमसमिवाज्ञनम् Sarakāpīthā. 102. 17; 465. 2; CandāKau. 4. 31; NarmaMā. 3. 28; AśvaVai. 7. 61; Hastyāyur. 186. 12 (2. 10)); 191. 22 (2. 11); KāvyPra. 676. 6; DaśāvaC. 8. 510; EI. xii. 278. 91; Mitā. 22. 1 (*on 1. 70*); ĪśānSiPa. i. 8. 120; i. 15. 128; SārṅgaS. i. 6. 18; ii. 12. 138; iii. 8. 42; SaṅkhaSm. 3. 13; वाष्पश्वपि नाज्ञनम् SubhāRaK. 22. 22; 24. 13; ĀryāSaSa. 683; अश्वोर्नेश्विपदञ्जनम् ... सुदृशां प्रलयमालिङ्गति GitaGo. 11. 20. 3; EI. xii. 153. 52; तिलकश्वकासे । एणीदृशां दोहददृष्टिपतैरिवाज्ञनेनाहितसंविभागः SriKaC. 6. 28; 2. 19; तयोः प्रसाधयामा-सुनेयनायञ्जनेन ताः । नीलोत्पलवनापातिभृङ्गसब्रह्मचारिणा TrisaSaPuC. i. 2. 811; अञ्जनेन ... सितांशुकम् । निर्मलोऽपि गुणग्रामो लोभेनैकेन दूष्यते TrisaSaPuC. i. 2. 1026; PariPar. 8. 385; 12. 386; NaisC. 15. 34; EI. xiii. 201. 14; SmrtiCan.

